BA Part - III

History

By - Dr. Durga Bhawani

Scanned with CamScanner

BA Part IIIrd History (Hons) VIth Paper.

Q. उन परिस्थितियों एवं कारणों का वर्णन करें जिनके चलते पाकिस्तान की माँग की गई।

अथवा

भारत-पाक ~~विभाजन~~ का विभाजन की परिस्थितियों का वर्णन करें।

Ans:- भारत विभाजन भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। भारतवर्ष अनेकता में एकता का प्रतीक माना जाता है। अखिल भारतीय पैमाने पर पूरे राष्ट्र को एक राजनीतिक सूत्र में बाँधने का प्रयास सर्वप्रथम अंग्रेजों के ~~साम्राज्य~~ साम्राज्य की स्थापना के साथ ही संभव हो सका। शुरु में अंग्रेजों ने हिन्दू और मुसलमानों के बीच भेदभाव की नीति को प्रोत्साहन नहीं दिया था किन्तु 1857 के विद्रोह के अवसर पर हिन्दू और मुसलमानों के गठजोड़ को देखकर वे आतंकित हो उठे और "फूट डालो और राज करो" की नीति पर उतर आए। हिन्दुओं की उपेक्षा कर मुस्लिमों को संरक्षण देने के कारण साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला और 'हिन्दू तथा मुसलमान दो पृथक राष्ट्र है' का नारा मुस्लिम लीग के द्वारा स्वीकार कर लिया गया। साम्प्रदायिक शक्तियों को उभार कर अंग्रेजों ने अन्ततः भारत का विभाजन किया और दो पृथक राष्ट्र का निर्माण करने में उन्हें सफलता मिली।

भारत विभाजन के निम्नलिखित महत्वपूर्ण कारण थे :-

1) अंगरेजों की चाल - पाकिस्तान की माँग का एक प्रमुख कारण यह था कि अंग्रेज शासक अपनी 'फूट डालो और शासन करो' की नीति के द्वारा स्वाधीनता की भावना को दबा कर, हिन्दू मुस्लिमों को आपस में लड़ा कर, मुसलमानों को अपने पक्ष में मिलाकर अपना शासन बनाए रखना चाहते थे। इसलिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उन लोगों ने लीग और मुसलमानों को अपने पक्ष में मिलाना शुरु कर दिया। इससे मुस्लिम ब्रिटिश परस्त हो गए और अंग्रेजों का अपना ~~विभाजन~~

हितैषि समझने लगी तथा अंग्रेजों ने भी लीग की उचित - अनुचित माँगों को मान कर उन्हें अपने प्रभाव में बनाए रखा।

2) 1937 ई० के चुनाव में असफल एवं आतंकित — 1937 ई० के चुनाव में जहाँ कांग्रेस ज्यादा स्थानों पर सफल रही वहीं लीग को कम सफलता मिली। फलतः लीग ने कांग्रेस के सहयोग से प्रांतों में सरकार बनाने की इच्छा जाहिर की परन्तु कांग्रेस ने लीग को अपने साथ लेने से इन्कार कर दिया। इससे जिन्ना और लीग के नेता निराश हो गए और उनमें यह भय भी व्याप्त हो गया कि हिन्दु बाहुल्य प्रांतों में कांग्रेसी सरकारों द्वारा मुसलमानों पर अत्याचार किया जाएगा। फलतः उनका रुख कांग्रेस - विरोधी हो गया। तथाकथित जाँच समितियों द्वारा यह दिखलाने की कोशिश की गयी कि कांग्रेस, जो हिन्दुओं की संस्था थी - मुसलमानों पर अत्याचार कर रही थी साथ ही यह भी तर्क दिया जाने लगा कि भारत में किसी भी प्रकार की संसदात्मक व्यवस्था में मुसलमान सदैव अल्पमत में रहेंगे और उनके हित सुरक्षित नहीं रहेंगे। इसलिए मुसलमानों के लिए एक पृथक देश - पाकिस्तान का निर्माण मुस्लिम हितों की सुरक्षा के लिए आवश्यक था।

1930 ई० से ही विभाजन की योजनाएँ पेश की जाने लगी। इन योजनाओं पर अंग्रेजों की प्रतिक्रिया जानने के लिए 1938 ई० में मुसलमानों का एक प्रतिनिधि मंडल, जिसमें लीग की कार्यकारिणी के दो सदस्य भी थे। पैलेस्टाइन सम्मेलन में भाग लेने के लिए भिन्न गए। उन लोगों ने इंगलैंड में भारत सचिव एवं उपसचिव से भारत - विभाजन की योजना पर वार्ता की और उनकी सहमति जानकर 1939 ई० में भारत लौटे। इससे जिन्ना का हौसला बढ़ा और 1940 ई० में उन्होंने "पाकिस्तान प्रस्ताव" पेश किया।

Scanned with CamScanner

3) लीग की शक्ति में विकास — 1936-39 ई० के दौरान लीग की शक्ति में तेजी से वृद्धि हुई। एक अनुमान के अनुसार 1927 ई० में इसकी सदस्य संख्या मात्र 1330 थी वहीं 1938 ई० यह लाखों में पहुँच गई। 1944 ई० में यह संख्या करीब 44 लाख तक पहुँच गयी। अधिकांश मुसलमान लीग को ही अपना सच्चा राजनीतिक प्रतिनिधि समझने लगे। कांग्रेस में मुसलमानों की संख्या बहुत कम थी। बंगाल और पंजाब में उसकी सरकार भी थी। इस बढ़ी हुई शक्ति के आधार पर लीग ने ऐसी माँगें रखनी शुरू की जिसे कांग्रेस स्वीकार करने की स्थिति में नहीं थी। लीग ने दावा किया कि मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार सिर्फ मुस्लिम लीग को है और कांग्रेस सिर्फ हिन्दुओं की संस्था है। अगस्त 1938 ई० में जिन्ना ने माँग की - कि हिन्दू-मुस्लिम एकता कमिटी, जिसे कांग्रेस नियुक्त करना चाहती थी उसमें कोई भी मुसलमान नहीं हो। गाँधी जी जब अपने साथ अबुल कलाम आजाद को लेकर इस प्रश्न पर जिन्ना से बात करने पहुँचे तो जिन्ना ने बात करने उनसे से इनकार कर दिया। इस प्रकार कांग्रेस और लीग की आपसी कटुता बढ़ती गई।

4) हिन्दू-साम्प्रदायिकता का विकास — मुस्लिम लीग को कट्टरपंथी बनाने में हिन्दू-साम्प्रदायिकता एवं हिन्दू 'महासभा' का भी बहुमूल्य योगदान था। महासभा की नीतियों और कार्यों ने मुसलमानों में असुरक्षा की भावना बढ़ा दी। हिन्दू महासभा, आर्य-समाज एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सहयोग से हिन्दू साम्प्रदायिकता का प्रचार कर रही थी। इसने दावा किया कि - "भारत के मुसलमानों का मुख्य भाग हिन्दू धर्म से परिवर्तित लोगों का है।" इनके 'शुद्धिकरण' की व्यवस्था की गई। जिससे वह पुनः हिन्दू धर्म में प्रविष्ट हो सकें। मुस्लिम लीग द्वारा दिए गए - "दो पृथक राष्ट्र" के सिद्धांत को हिन्दू महासभा ने स्वीकार किया और नारा बुलंद किया "हिन्दुस्तान हिन्दुओं के लिए"

साम्प्रदायिक दंगों में इसने हिन्दुओं की रक्षा की। मुसलमानों द्वारा माँगे गए राजनीतिक अधिकारों का इसने विरोध किया। फलत: अल्पसंख्यक मुसलमानों में आतंक और घबराहट की भावना व्याप्त हो गई। वे समझने लगे कि भारत में उनकी सुरक्षा नहीं हो सकती है अत: विभाजन की माँग जोर पकड़ने लगी।

5) **कांग्रेस की नीतियाँ** — कांग्रेस की नीतियाँ भी बहुत हद तक विभाजन की माँग के लिए उत्तरदायी थी। इसकी दुरभिसंधि नीतियों से मुसलमान हमेशा ही आशंकित रहते थे। कांग्रेस द्वारा मुसलमानों को अपने प्रभाव में लाने के प्रयास से लीग के नेताओं में घबराहट फैली। मुसलमानों को लीग की ओर आकृष्ट किए रखने के उद्देश्य से लीग के नेताओं ने पाकिस्तान की माँग को ही उपयुक्त समझा। इसके अतिरिक्त कांग्रेसी नेता अपने कार्यों से लीग की इस शंका को बल देते थे कि कांग्रेस हिन्दुओं की संस्था है। स्वयं महात्मा गाँधी का रवैया हिंदुत्व का पुट लिए होता था। 'यंग इण्डिया' में उन्होंने स्वयं स्वीकार किया था कि "मैं अपने को सनातनी हिन्दू कहता हूँ।" उन्होंने वेदों, वर्णाश्रम-धर्म, गो-रक्षा और मूर्ति पूजा में अपनी आस्था प्रकट की। कांग्रेस के अन्य नेता भी मुसलमान-विरोधी स्वर अपनाए हुए थे। गाँधी पर पटेल के प्रभाव से भी मुस्लिम लीग को शंका होती थी कि सभी कांग्रेसी हिन्दू-परस्त नीति अपना रहे हैं। 1940 ई० के बाद उसकी सभी माँगें इसी केन्द्र-बिन्दु के इर्द-गिर्द होती थी। अन्तत: उसे अपने उद्देश्य में सफलता मिली।

6) **अगस्त प्रस्ताव और क्रिप्स मिशन** — द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन और मित्र राष्ट्रों की स्थिति नाजुक बन गई थी और भारतीयों का सहयोग इस युद्ध में आवश्यक था। अत: भारत में राजनीतिक वातावरण को शांत बनाए रखने के उद्देश्य से 8 अगस्त 1940 ई० को वायसराय ने "अगस्त प्रस्ताव" पेश किया।

Scanned with CamScanner

इस प्रस्ताव में मुसलमानों के विशेष हित का ध्यान रखा गया। स्पष्ट तौर पर यह घोषणा की गई कि अल्पसंख्यकों की स्वीकृति के अभाव में सरकार किसी भी संवैधानिक परिवर्तन को लागू नहीं करेगी और युद्ध के बाद संवैधानिक प्रश्नों पर विचार करने के लिए एक सर्वदलीय समिति गठित की जाएगी किन्तु कांग्रेस इस प्रस्ताव से खुश नहीं थी इसलिए उसने इसका विरोध किया। परन्तु मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की माँग स्वीकार न किए जाने का बहाना बनाकर ऊपर से अपनी असहमति तो जाहिर की परन्तु अन्दर से वह संतुष्ट थी। क्योंकि उसके हाथ में अब एक ऐसा हथियार आ गया था जिसके द्वारा वह अपनी माँगे पूरी करवा सकती थी। क्रिप्स मिशन के कुछ प्रस्तावों से मुस्लिम-लीग प्रसन्न हुई परन्तु संविधान निर्माण की प्रक्रिया से वह असंतुष्ट थी।

भारत छोड़ो आन्दोलन तथा बाँटो और भागो का नारा - सरकारी रवैये से असंतुष्ट होकर कांग्रेस ने अगस्त 1942 ई० में भारत छोड़ो का नारा अंग्रेजों के खिलाफ बुलंद किया। इस अगस्त-क्रांति पर लीग की नीति प्रतिक्रियावादी थी। जिन्ना ने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने इस आंदोलन के द्वारा सिर्फ अपना स्वार्थ देखा है मुसलमानों का नहीं, इसलिए मुसलमानों को इससे अलग रहने की सलाह दी गई। लीग इस आन्दोलन से तटस्थ रही इतना ही नहीं, दिसम्बर 1942 ई० में लार्ड लिनलिथगो ने जब भारत की एकता और अखण्डता बनाए रखने की बात कही तो लीग क्रोधित हो उठी। 1943 ई० में उसने कराची अधिवेशन में अंग्रेजों भारत छोड़ो नारे के जवाब में अंग्रेजों बाँटो और भागो का नारा बुलंद किया। लीग चाहती थी कि अंग्रेज भारत का बंटवारा कर, पाकिस्तान लीग को सौंप कर यहाँ से चले जाएँ। उसने भारतीय एकता को बनाए रखने वाले संविधान को लागू करने का विरोध करने के लिए समितियाँ बनाई।

———— x ————